अपनी अन्तड़ियों से उत्पन्न, अपने प्राणों से प्यारे, अपने नयनों के तारे का समाज मर्यादा के भय से नवजात-शिशु अवस्था में ही दुखद अन्त या परित्याग कर देना, हमारी मजबूरी —— ऐसी ही करुण-कथा कुन्ती काव्य का कथ्य है।

नर और मादा के संयोग-सम्मिलन द्वारा नवीन जीव का सृजन इस जग नियन्ता की सृष्टि का एक शाश्वत सत्य तो है, किन्तु किसी घोर नाटक रचाकर छल-प्रपंच के माध्यम से किसी भी अक्षत-यौवना कुमारी के कौमार्य से खिलवाड़ करके गर्भ-धारणोपरान्त पूर्णतः उसे ही जिम्मेयार ठहरा देना, और इस सभ्य समाज के तथा-कथित नर-पुंगवों द्वारा उस नारी को लांछित करके कलंकिनी, कुलटा आदि शब्दों से विभूषित कर-कर के जीव हत्या, वात्सल्य हत्या एवम् आत्म हत्या तक के लिए मजबूर कर देना, और यदि भाग्य से या दुर्भाग्य से वह अवैध सन्तान जीवित बच भी गई तो जीवन पर्यन्त उसे वंश विहीन, जाति विहीन व वर्ण विहीन अवैध सन्तान कह-कह कर कदम-कदम पर उसका तिरस्कार करते रहना कहाँ तक उचित है ?

ऐसे ही ज्वलन्त प्रश्नों को 'कुन्ती' काव्य के प्रणेता ने कुरेदा है।

—प्रकाशक

कुन्ती

कुन्ती

पानावळी

आचख्यु कवय केचित, सम्प्रत्या चक्षते परे ।
आख्या स्यन्ति तथैं वान्यें, इतिहास मिमम् भुवि ।।

(महाभारत अनुक्रमणिका पर्व २५ व २६)

गीता प्रेस गोरखपुर वि.सं. २०२५ तृतीय संस्करण

मंगळ कामना

श्री कल्याण गौतम राजस्थानी रा यावा अर समरथ ‹
है । यूं तो आपरी कविता रा घणा विषय है, पर नारी रै जी
रा विविध पक्ष आपरी कलम नै भोत भावता लागै । आ
फुटकर कवितावां में जठै नारी रो चित्रण है, उण में नारी र
रै साथै उण रै शोषण रो तीखो विरोध है ।

'कुन्ती' कवि रो राजस्थानी में लिख्योड़ो प्रबन्ध काव्य
महाभारत रै नारी पात्रां में कुन्ती घणों महताऊ पात्र है । हि
में 'कर्ण' नै विषय बणा'र कई काव्य लिख्या गया है । श्री गौ
आपरै 'कुन्ती' काव्य में कुन्ती नै एक नवै रूप में देखी है
कल्पना रै सुन्दर प्रयोग सूं कुन्ती रै जीवन री घटना
जागां-जागां मानवीय पक्ख नै उजागर करयो है । कथा-प्रसं
भाव-व्यंजना, अभिव्यक्ति चातुर्य, रस परिपाक, भाषा-शैली आ
री दृष्टि सूं 'कुन्ती' काव्य आधुनिक राजस्थानी रो एक उल्ले
जोग ग्रंथ बण्यो है । म्हारी मंगळ कामना है कै कवि आप
कलम सूं राजस्थानी रै साहित्य-भण्डार नै घणों समृद्ध बणावै

—चन्द्र दान चारण

उपाध्यक्ष

राजस्थानी भाषा साहित्य अर संस्कृति अकादमी

१३-१२-१९८८

काव्य सूं पैलां दो ओळ्यां

— ४ —

जद-जद भी पांडवां री बात चालै पांडवां री मा कुन्ती रो नाव
ण कथा सूं न्यारो नीं कर सका । महाभारत अर पांडवां री कथा नै
तो जिकां कुन्ती नै पांडवां री माता रै नाव सूं ओळखै, पण अैड़ा कितरा
जका कुन्ती रै मुळगतै हिवड़ै री काठी पीड़ सूं पिछाण करै ?

जे विचार कर'र देखां तो कुन्ती रो सारो जमारो बाळपणै सूं
ले'र जिन्दगाणी रै छेहला दिनां ताई करड़ो घणो बळपतो लखावै ।
बड़ी काटाळ ऊझड़ झाड़्यां, सूखा-सूना-तपता-मरुथळ, बज्जर जैड़ी
कठोर चट्टानां, औघट-घाट्यां, विकट पहाड़्यां, अन्तर विरोधी भावनावां
री पाताळ नापती खाईयां ऊं भरीज्योड़ो जमारो उणा जीयो ।

महाभारत-कार-री करड़ी कलम ऊं कुन्ती इण आभिजात्य (पण
ऊंदर्दे चाटियोड़ी खोखली) समाज व्यवस्था रो पुरजो बणर रैयगी, जकी
कणाई आपरै जलम रा देवाळ माईना री ममता सारू तरसै तो कणाई
परणजाणिये-अपराध रै ताण जलमियै आपरै कुंवारै-वात्सल्य नै हेजण
सारू झूरै ।

मोळायत माईना परणाई तो सेवट अैड़ी जागा ऊठै नियोग रो
डांगड़ी रै पाण टग-टग हुरतै वंस नै बचावणै सारू वा रोगी अनै नाजोगै,

न-बन भटकणां । वारणावित, अेक चक्रा नैं बिराट-नगरी री दाघड़
तावा । छेवट जेठूता री काळी करतूता रै कारणै महाभारत रा
घडाण मैदई मडता निजर आया ।

धरम-नीति अनैं जुद्ध कळा रा जबरा जाणीकार, महा पराक्रमी
बल-प्रतापी जगत-गुरु-वासुदेव जनारदन जैड़ा ग्यानी-धिग्यान्यां रै
बिच-बचाव नैं राजीनामैं री सैंग चेस्टावां असफल व्हैगी :

जुद्ध रा नगारा बाजण लागा । मुगा-मुगा'र कुन्ती री काया
कांपण लागी । चोफेरी अटावरी-आंधी । घर्क बाई धेंमा रै बिना मोच्यां
करण सोच-सोच नैं अेक-अेक पाण्डु नैं मार न्हाखैला, इण में भी शंका
नी । उण नैं आपरी आंखड़ियां री आग सूं ई चोफेरी प्रळय-काळ रो
प्रगबुक लाय लपटा आवतीं निजर आयी, जिण सूं उण में भूप-पाण्डु री
धन-मरजादा रो अंनाण-अंनाण ई मिटता सा लखायो । आम्यां रै आगै
अंधारो । छेवट कुन्ती अेकर आपरै अमूझै हाल री हिय्वन मावई, अर
जाय पूगी आपरै मोभी-बेटै करण कनै, आपरै नानकड़ै पाबू-पूता रा
प्राण-भिख्या मांगवा ।

कुन्ती री जिन्दगाणी रै अन्तर-मथंण रो ओ चरम-छिण है
जद कुन्ती आपरै कुंवारै वात्सल्य रो आपरै ई मूंडै सूं मोल मांग रैई
आपरै परणियोड़ै-वात्सल्य नैं बचावण सारू, नितु धरम सूं निरबिनो
मोभी पण त्यागियोड़ै आपरै उण पूत सूं ई ---।

चवदै महाराजाधिराज पुरखा कुरु, शान्तनु नैं भीष्म जैड़ा
वंस में ई जामियोड़ै भूप-पाण्डु री पटराणी, कुरुखेत्र रा अड़ीक कुन्ती

कार, धरती रा त्रिकट-जोधा, महा-पराक्रमी पाण्डवां री आ माता, दीन
घर भिखमंगीपण । अर्क रे गुमान सूं करोड़ू-कोसां आंतरै, वा धरणी
सूं करड़ी घणी मही हुवंता, तद जाय परी'र कठैई दूरी हुवंता, करता
भीख मांगण मांय । पण सेवट फीकर मजूर करयो हुवंता के भेक परा
नै छोड़'र बाकी पाण्डवां नै समरथ हुवंता थका भी मन मारिया ।

अरजण अर करण''''करण अर अरजण''''। कुन्ती साव दो
अेकूकेऊं वाल्हा । काळजियै री कोर । किण नै त्यागै अनै किण
अंगेजै ''''। अठै आय'र कुन्ती रै हिवड़ै री करड़ी घणी परीख्या हुयी
छाती माथै भाठो मेल परी नै वा छेकड़ ताई धीजै रो पल्लो पकड़ि
रैयी । पण जुद्ध निवड़िया पछै उण रै धीजै रो बांध अचाणचक टूटग्यो
उण वाघ रै प्रळयंकारी जळजळाकार में कुन्ती ऊमचूम सी डूबक-डू
हुवंती दीसी ।

आखी ऊमर लुकोयोड़ै उण भेद नै कुन्ती सेवट जळाजळी-
माथै गुप्त नी राख सकी, कारण उण री अन्तस-आरसी वखत रै बज्र
प्रहार सूं चकनाचूर हुय चुकी ही । अबै उण री आंख्यां रै आगै रगतो
पोढ़ियोड़ै करण री सूरत नाचण लागी । जागतै थकांई घड़ी-बड़ी उण
सुपना-सा आवण लागा । उण सुपनां मे उण री मोभी बेटो करण सदै
केई-केई चिरत करतो दीसण लाग्यो । उण वेळा करण सूं महा-बिछो
रा बादळ कुन्ती रै हिवड़ै अक्कासा घुमटै हा । छिण-छिण ओळ्यूं रै
दामणियां दमकै ही । अठै गुण-कथण री बूंदां-बांदी नै उद्वेग अर प्रलाप
री घणगोर बिरखा । साथै ई उणमाद री खेंखाड़ा भरती अटावरी-आंधी

में कुन्ती पूत नै बळर्तै·····। कोजी घणी बळर्ते। चौफेरी उण नै करण ई करण उभो दीसै, पण वा उण नै पा नी सकै। छेकड़ मूरछा री घटाटोप उण री चेतना नै घाय दाबै। मळै प्रवाणे·····। मागीड़ो सांवठो काळो पधारो। मारो जग धेकाकार। हाय रै कुन्ती रा भाग·····।

□ कल्याण गौतम
डिंगळ साहित्य सदन
३२ ४०८ चौतीना कुआ रै नैड़ै
मतासर हाउस री गळी,
बीकानेर—३३४००१

२६ जनवरी १६८६

★★★★

अचूम्भो

●●●●

हिवाळो अचल
साखी है
चल सारी
गंगा जळ-जमना-जळ
जड़-जगम
धरती रो कण-कण
साखी
आखी धरती पै
गिळूंडा मारथा
पसरियोड़ो
मैरांण ।[1]
पुरखां री रीत
उण जुग सूं आज-लग
पुरख-प्रधानव्यवस्था
माण नै मरजादा
कांणं नै कायदां विच
रुळग्या है माटी में

1 मैरांण—समन्दर

कोई रतन्न
हर जुग में,
डुबंता आया है-
छळ-छन्द,
आज भी है
हिये-हिवळास रै ओलै
वोई इन्याव,
राई रै ओलै परवत
लुकता आया है
अजूं ई लुकै;
तड़फै पण
हर जुग में
नारी : क्वारी
(वणै जकी परणाऊं
मगेजण मारवणी
पुरख री अरधांगी
परणेता प्यारी)
अेकलड़ी कळपै
लुकयोड़ी रोवै
आखी ई रात।
काळै अंधारै में
सूनी भींत्यां सूं

भचभेड़ी मारता,
गूंजे भळे
अन्तम् में
ऊण्डा सागीड़ा
मरद री-मरदानगी रा-
तन्त वायरा वोल-
"ऊभो म्हैं छाती ठोक
म्हारै थका क्यू डरै ?
पावासर[1] री हंसणी
मिरगा नैणी
गज गामण
केसर वरणी कचनार
म्है मरद मूच्छाळ
म्है थकां कोनी थ्है-हार,
करतो सरी इतबार
मरदां री वात
हरनाक ई हरै
आसर निरा जात।"

उण बेळा बै,
मान-मनादरणा

[1] पावासर—मानसरोवर

मीठी मनवारां बिच
मिसरी सूं मीठा बोल
ऊंची बिरदावळियां—
"कीं नीं व्है,
कीं नीं व्है" रै ओलै
मनमथ[1] री ऊंडी गाज
शब्द-स्पर्श
रूप-रस-गन्ध री
मोवणी माया/मूंडागै
कंचन-सी काया
आंगणै बिच/चिड़कल्यां री
रळियावणी रम्मत[2]
मन-मैराणै बिच
रुड़ी-रुपाळी[3]
उछळती ऊंची छोळ[4]
जाणै किण ठौड़ सूं
किण वेळा/ऊठी ही आंधी
धरूगी जकी पळ भर में
ऊंची आकाशा,

---

१ मनमथ—कामदेव
२ रळियावणी रम्मत—मनमोहक क्रीड़ा
३ रुड़ी-रुपाळी—अत्यन्त सुन्दर
४ उछळती ऊंची छोळ—अत्यन्त वेग से उछलती हुई ऊंची लह

पड़ै हीं फुंगारां
झिरमिर री करणाई।

लाग्यो इक फटकारो
ओगड़ल्यां मिचगी
उण वेळां/ जाणे क्यूं ?
जळबाला नाची हीं
आभो भळै गरणायो,

जूनै - जुगारी री
"शाश्वत-प्यास"
जाम्योड़ी सागै ई
स्रिस्टी री रचना रै
उण वेळां/अचाणचक
जाणै क्यूं जागी ?
चातकणी चहकी ही
पपैयो बोल्यो–
"आभै सूं अरदास
प्यास घण प्यास
धरती री प्यास ...
इमरत री अेक बूंद ...
— . —— .... — ... ।"

आभै री ऊरमां
धरती अर वन खण्ड
म्माँई की भीज्यो हो,
समन्दर में सीपी नैं
स्वाती री ओक बूद
इमरत-सी अणमोल
अचाणचक मिळग्यी
जाणै क्यू बणग्यी ही, --
मोती वा अणमोल
धीग्गाणं धक्कै सू
"गजब रे गजब
फाट ग्रै धरती-मा
थारै मे समाऊ
अबै म्है
कठै जाऊं ?
मिटै है मरजादा
मानखै री म्हारै ताण,
अक्कल म्हारी मारी
म्है छूं/असन-सवांरी
है म्हारी धरती-मां !
म्हनै ठा नीं/ थू ई जाण,

यूं भीं गो भीजी
उण दिन गागोड़ी,
इन्दर जद वूठो
श्रावण रै श्रांगणियै
जळधारा नाची जद,
इमरत-सो वरस्यो तद
वनखण्ड में हरयो हो
गागी थूं धरती-मां !
कांई हुई इण में हांण ?
म्हनै ठा नीं/थूं ही जाण'

* *

वय-संधि री वेला बिच
जोबन रै उफाण रो
चूंटियो-सो चीकणो[1]
कंवळो रै कवळो
काचो झाग/निजू-
श्रांतड़ियां री श्राग/जामण रो पेट
निज देही री श्रंस
कींकर करोजै/भळै
ईयां विधूंस ?

---

१. चूंटियो सो चीकणो—ताजा मक्खन के समान मुलायम

मिनख जूण री
सलूणी मवेदना सू
मैराण-मन्थण[1] विच
माडै[2] लाधियोड़ा
उफणतै जीवन रै—
रतनाकर री छोळ रा
पैलाई रतन !
कवली कूपळियां विच
जाम्योड़ा थेडाई
अलेखूं/अण खिल्या फूल,
मिस्टी मे/पांख्यां वागे
आया नी आया,
पिरथो री पुन रो
पैलड़ो झोंको
लाग्यो नी लाग्यो,
वणा दिया जावै
काळ कलेवा,
न्हाखी जै निदूका
जाणै किण डर सू ?
घूरं घर घूंहै में

मैराण . .
। हो जाना

सूगी, सूगला/ अकूरड़्यां माथै[1]
मोशीजे पांटा
भिणाजे थकै सूं
माख्यां भीच'र
जाड्यां भीच'र

जां रै उतरया कर'र,
गुसळीजगा पड़ै जद
जीवन रा प्रथम-फूल
हाड़ी में पालियोड़ा
हेमाणी पिण्ड-सा
रुई में पळिटियोड़ा
हीगळू री ईंट-सा
पण कंवळ सू कंवळा,
माखण सूं चीकणा
लाखीणा रतन्न
करै कुण जतन्न ?
भख बणै गिडका रो
अणमोल मानखो
मरजादा सारू
उण जुग सू/आज तक ।

---

[1] अकूरड़्या माथै—गन्दे कचरे के ढेरों पर

फिट रै कायरां
चौपाया चोखा सेग
पखेरू आच्छा है
दो पाया थारै सूं
इण ठौड आयां तो

धिक्-धिक् रै मानखा
धिक् थारी मरजादा
चेत कर/चेत कर
निखिल ब्रंमाण्ड रा
सर्व-सिरै प्राणी,
मैं जीवां सूं सांतरी
थारी जिन्दगाणी

सगळा सूं सखरो
बण्यो थारो पींजरो

ज्ञानी-ध्यानी-विज्ञानी
अक्कल रो थूं पूतळो
जळ-थळ-नभळ-गून
हाजरिया थारा
अचूम्भो करै याज
नीं लखनारा
देख थारा पगलिया
चांद री छाती पर,

कांपै आज काया
मंगल अर सुक्कर री
(पण) धरती पै जीवै
जूण थू कुक्कर री !!
अेकही अचूम्भो !!!

भळै अजूं / वयूं जीवै
विस्फोटक-वम वणातो
सम्प्रदाय-बिस बेलड़िया नै
जड़-वरण-व्यवस्था
न्यात नै नेंतणो
औसर नै मौसर,
अणमौत मरणो

साठ कळी रा घाघरा नै
गज-गज लाम्बा घूंधटा
झंझरीदार जाळियां
चौफेरी चौवारा/तेलड़ी खाईयां
कोट नै कंगूरा/जूनै जुगा रा
जीरण परकोटा
कुण नै अब चाईजै ?
भळै बयानै चाईजै ??
निन-जुग गू/माज सग

वासना रै वासती में
अेकै ढाण न्हाठतो[1],
भोगां में भुंवै नित
भटभेड़ीं खावंतो,
साम-दाम /डण्ड भेद
नीत्यां नित अपणाय
काची नै कुंवारी कोई

कंचन-सी काया रा
लावा सेग लूटतो,
अणछक रस रैयां
तोई नर निरमळो !!
अेक ही अचूम्भो !!!

दूध आप धोयोड़ो
वण्यो सटवा सूठ-सो
दोष छेकड़ देवंतो–
'नार व्यभचार है'

हुई पण किण रै पाण ?
पूछै भळै क्यूं कोई
पवन-पान भरियोड़ो
गळाटूप/व्यवस्था विच

१. अेकै ढाण न्हाठतो—त्वरित गति में निरन्तर दौड़ रहा है।

दूजो पख

अंधारो

इकोवड़ी इण/व्यवस्था मे
अंधारो ई अंधारो,
नितूकं रो ऊतरे
ऊपर सू अंधारो,
उण जुग सू /आज लग
अटल है अंधारो।
विन्दा रे महला बिच
विष्णु बण उतरियो हो,
झांवपो भळे चौफेरी,
धीव माथे ई जद
च्यारू ई मूंडा सू
चौफेरी अंधारो,
धीवर री धीवड़ी[1]
पण / रोई जद नाव विच

1. धीवड़ी—मत्स्यगन्धा-सत्यवती व पाराशर प्रसंग

घुसळीजं येनारी
पट्टी में दाणां ज्यू
पिसती रै यै नारी
पुरुष-प्रधान-व्यवस्था नै,
नमस्कार कीकर ?
कुदरत रै घर सूं ई
नारी.......!
धेकड़ नारी।
गजब रो ग्रधारो !!
मिनख !
थारो मिनख पणो
कदै सांच हुवैला ?

★ ★ ★

दूजो पर्व

अंधारो

दकोवडी इण/व्यवस्था मे
अंधारो ई अंधारो,
नितूकं रो ऊतरे
ऊपर सू अंधारो,
उण जुग सू /आज लग
अटल है अंधारो।
भिन्दा रै महला बिच
विष्णु बण उतरियो हो,
झाक्यो भळे चौफेरी,
धोव माथै ईज जद
च्यारू ई मूडा सू
चौफेरी अंधारो,
धीवर री घोवड़ी[1]
पण / रोई जद नाव बिच

---

[1] धीवर री धीवड़ी—मत्स्यगन्धा-सत्यवती र पाराशर प्रसंग

उग्यों री मधाणी,
पेड़ा रै पंगलिन
पहूंतै जोवन रै,
तेज री पारसमन
कुंवारी कौतुहल
कर बैठ्यो पान्राण
मनड़ै रै/मैदान मज्झ
वय-संधिरी वेळा रा वै

मटल उमटता ज्वार
सलूणां – सागाड़ी
सांवठा, सुकुमार,
जौवन रो अंकुरण
पण / काचोड़ी कचनार,
सलूणै सुपनां रो
भोळोड़ी-वहार,

दुरवासा री दियोड़ी
मोवणी माया विच,
केसर-सी काया पै खिचतोई आयो
अगूणं खितिज सूं[1]
...नोक रो,

१. अगूणं खितिज सूं

भळै सागीडो ग्रंधारो

.... ।

समरथ नै काई दोष
उण जुग सू /ग्राज लग
पाप नै/ग्राप रै
ओलै यू लुकावता
मिथक/ग्रर रूपक-रच
ग्रण माग्या/ग्रण चाया
पून दे जांवता.
नारी नै कुवारी नै
माडाणी जाणै वयू ?

ग्रन्तरीख छोड यू
सैस-किरण धारी वै
सूरज-सा देव भी ।
धींगाणै - धक्कै सू
बैठो ग्रो ग्रधारो ।।

सूरज रै सैमूण्डै
सूरज रै नाव रो
मांचाणों ग्रधारो.

उगरधामो देश दिन

द्वापर-सा जुग में,
भूप कुन्तीभोज रै
महलां में ग्रंधारो/

लावा मै लूटग्यो
ग्रखन-कुंवारी रा,
केसर री क्यारी रा

भाग री मारियोड़ी
हिरणी ज्यूं झांकै,
थर-थर कांपै
ग्रण चीति/वीती
धकै कांई हुवैला?

पूरबला लेख/सोनै री थाळी बिच
लोहै री मेख,
भाग रै स्राप सूं
हुयो कांई कामण ?

हे म्हारी जामण !
ग्रळगी ग्राज थू घणी
ग्रैड़ी ग्रबखी/बेळा में
थारै बिन/किण नै पीख

हे म्हारा बावनिलया !
जलम रा देवाळ,

ओधारा इण माईनां नै
आवै करडी झाळ,
जनमती नै/क्यू म्हाखी था
वांझड़ै री गोद ?
वीर ! जामण जायो कोनी
करै कुण विरोध ?

रावडो बंधाय लेनो
रिछपाळ रो भार,
अणमणी यूं / देख म्हें नै
पूछतो हर वार–
"म्हारी जामण - जाई थन्नै !
लाग्यो क्या रो सोच ?
चान्द-किरण-सी बेनड़ म्हारी
कर [illegible] अफसोस
[illegible] नो इमरत लाऊ
[illegible] नै मू चीर ।

वीरं रै नावसूं
पड़ै जळजळा-झांवळा[1]
दूर ऊगता क्षितिज पै
निरखाळो भायो प्रिया
प्रिया हो' चिलमणों
वीरे नै, अडीकणों
वीर जी ' हो कटै ?
प्रिया / पीळै पोतड़ियै
खोळायत ही अठै।
टप-टप टपूकड़ा
सींपां दोऊं डवाडव
कुरजां अेक/कुरळाई
आभै में अचाणचक
अण खूट अमूझो
घुटण अर ऊमस
अेडीऊं चोटी लग
वाळा सा बवै,
कीड़िया-सी खावै,
कदळी-सा खम्बा
केसर वरणा

1. वीरं रै नावसूं पड़ै जळजळा झांवळा—डबडबाई आंखों के सामने भाई की काल्पनिक आकृति के बिम्ब।

घड़ी-घड़ी कांपै ।
रंवाळी ऊभी व्है,
थर-थर धूजै
हिवड़ै में/ छिण-छिण
हिलूरां उठै,
मांय रो मांय/ओ कुण ?
घांटो-सो मीमे.
काळजियो चूंटै,
सांस नी मावै
हिवडो करै/धक्-धक्
दोऊ पग धूजै,
मांखड्ल्यां मिचै
उवकारचां श्रावै
डोळा-मा नीसरै.
भावी रै विचार सू !
माईता रै नांव सू !!
प्रणजाण्या ग्रपराध सू !!!
अेवई मणेसो उण मैं
पूर-पूर सावै—
"वचन तेज पुरण रा
रीता कद जावैला !
पूत जहर श्रावैला
म्हारी बदारी कुम में ।"

तीजो-पर्व

पीड़

बीत्या कई दिन
पखवाड़ा महीना
भूरी नै सोगी
नु'कती नै छिपती
आळा नै टाळा में
ऊंचै आभल महलां
ऐकलड़ी कळपै,

सुसियै ज्यूं कान दे
हिरणी ज्यूं झांकै,
भारी दोघड़-चिन्ता
ऊभी ही कांपै
पळ भर में पळको
जळबाला/भळफळ ज्यूं[1]

---

१. जळबळा भळफळ ज्यूं—बिजली की कौंध के समान चमक कर तुरन्त छिप जाना

यादळ बिच लुकै

याबल री मीट सूं

पण/पेट रो पाप
रुई-पळेटी आग
सेवट/ऊपर तो आसी
चमको दिखासी

अंधारो जद अेकर
घणो-घणो छावै,
घुटतोई जावै,
घिर-घिर'र आवै,

चौफेरी सांवळो
पाप रो बाप ओ
आखी ई रात
ॱ री जात

[illegible]/[illegible] जिण में
अपारा री माया,

[illegible] री बसारी में
दांतड़ियां दराग
दमचोरां मार मूं
दांतड़्यां मुळगी
पसबगी/मळँ मुकगी,

मायड़ रा मोसां नित
माई-मा जेठा,
जळता नैं बळता
बोल्या रा बाण
बेळो कुबेळां
ववै तीखा/तीर-कुबाण,

घुड़की नैं झिड़की
बोल री कटार,
तीखी नैं चुभती
हुवै हिवड़ै पार
प्रिया रै नितूकी ।
धीजो पण राख्यो
धीवड़[1]-सूरसेण री

१. धीवड़—पुत्री

जाण्यो छेकड मन में
"मायट सो मायड ।
जामण घा वद ही ?"

भळै/माटो रै माडा
मन/फोभो घण सोर्ग
पग/न्हाग्यै निस्कारा
नद/अन्तस् गू गू ज्यो –

"अर्थ इण पाप सू
फोभो घणो सेस टोड़
निजू आतम घात रै

साग भलै हुवेला
मोटो घणो पाप रै
इण दूजै जीव रो"

छीजता छिण-छिण
घड़ी-घड़ी घुळता
तिल-तिल कटता
आई छेकड़ आई
वेळा-पुळ सागी,
अणथाग अमूंजो
आभो गरणायो
ऊंचै/श्राभल-महलां

मिटे/छिनक दिन में
अपार री माया.

केसर री क्यारी में
नागणियां पराग
मनचीतयां मार मूं
नागड़ल्यो मुळगी
धमरमां/मळ मुळगी,

मावड़ रा मोसा नित
माई-मा जेड़ा,
जळता नै बळता
बोल्या रा बाण
बेळी कुबेळां
बवै तीखा/तीर-कुबाण,

पुडकी नै भिड़की
बोल री कटार,
तोखी नै चुभती
हुवै हिवड़ै पार
प्रिथा रै नितूकी ।
धीजो पण राख्यो
धीवड़[1]-सूरसेण री

१. धीवड़—पुत्री

प्रिया पूत जायो,
बाळापण मायो
पीळ-पोतड़ियां
दिनमणी ज्यूं दीपै,

चौफेरी आभा
चकाचूंध छाई,
पळ भर में पौनड़
वाजी पुर वाई ।
भप-भप रा भपका
भळ/दम्भोळी नादां
सागे/जळवाला नाचै,
नौबत-नगारा
सागीड़ा बाजै,
ऊंचै अक्कासां
गिड़-गिड़-गिड़ गूजै,
मधरो रै मधरो
भळ/बायरियो बाजै
धरती रै आंगण पै
मोतीड़ा वारै
जाणै कुण बैठयो
ऊंचै अक्कासां !!

★ ★ ★ ★

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

पगुंची मान बाळो
धर पाधर¹ दवागी
नदी-मझार धारा
तिरमिर-सा झांकै
दोऊं किनारा.

हुयो गेल अंदो
फर्यै भळ' कांई
गीळी हुय झांकै
मागी बन राई

बीतै पल कीकर ?

★ ★ ★ ★

प्रिया/आंख खोली
घड़ी दो घड़ी में
पाई ठौड़ खाली,

हिरणी ज्यूं झांके,
लाम्बा घण ऊंडा

---

१. पाधर—सीधी

नूंवो रासो

तप्यो/आगी ऊपर
जीवण-मरुथळ,
तपतांई जावै
सूनी दिसावां
गूंजै ऊंडो अन्तस्
पड़धुन टकरावै
पूठी फिर ऊंचा
सूनां भींतां सूं
भचभेड़ी खावै।
आंख्यां रै आगै
पड़बिम्ब नाचै
जूनै-जुगां रा
बोदा चितराम
चेतै भळै आया
झीणां अर झीणां

हुयो खेल माड़ो,
मांडचा/ऊधा आखर
म्हारी लिल्लाड़ी,
कोझी वेळां-पुळ
वेमाता गैली
हुवै भळै कीकर
कारज कोई सखरो !
छोड़चा महल-मिन्दर
जगळ विच वामा,
वनखण्ड विच भटक्या
पाण्डु-सा राजा,
सोधी जीवरण आस।
कटै राग कीकर/पण
प्रीतम रै तन रो
लेख में मेख/अर
खूटो नै बूटी
कीकर कद लागी ?
मल्लै झाझरकै
मयम/भळै टूटो,
वज्जर पळगळियो
क्यूं/ मनमथ गरणायो ?
उफणी घण छोळा

रमें/आम्ब-नन्दा
भीजै बादळ-[illegible]
गेवैं या [illegible] महला विचाळ

★ ★ ★

नाची इक आई
वान्दी विचारी

हुई/आकळ-बाकळ
लार्प भळ मार्गी
हुया रंग-बदरंग
सासा नीं मावै
मथावळ में बाती—
"दादो सा हाला !
हुयो एक रासा
मची राड़ भारी,
मण्डप विचाळै
हळका घण बोलै,
कैरू नैं पाण्डु
दुरजोजण साथै
राधा-सुत*न्यारो,
हुवै री घड़ी ई
बण्यो अंग-राजा"

---

*राधा सुत—कर्ण

मन-मंराण गाज्यां
घटाटोप छाई
उतुंग-आभं ।
धर्क कांई व्हैला,
वण काळ आई
वयू/होणी री आंधी,
तद/आलिंगण वांधी
वयूं/ल्होड़ी राणी नैं[1] !
उन्मत्त वेळा/भळै
हुयी छीण काया
बुझी जोत झिण में,
बनखण्ड विचाळै
डाढया- गरळाया
ऊभा सात प्राणो

★ ★ ★ ★

छाई अंधारी
आँख्यां रै आगै,
आया ऊण्डा हेरा
घटा-टोप छाई,
हिवड़ै—अवकासां/घिर-घिर' र आई,
डूबी / दुक्ख-दरिया / विच
पारथ्थ माता ।

---
1. ल्होड़ी राणी-छोटी राणी (माद्री)

पूछी जात म्हारी
मुण/रीसां उफणतो
राती कर आंख्या
उठयो भीव-बांको,
भळै/पारथ सम्भाळिया
धनख-तीर तीखा,
पण/गुरुवर/उणां बरज्या "
थे हालो दादीमा !
वेगा-थका-सा"
मुणताई न्हाठी
भूप-पाण्डु-पाटराणी
सुध-बुध सैं भूली
गाभे-लत्तै री,
लाटा-सी ऊपड़ै,
हिवड़ै बिच्चाळै
चेतै भळै आयो
भीवै नै पायो हो,
केह हळाहळ।
घट्टी-सी घूमै
माथै-बिचाळै
आंख्यां चकराई,
सेंग/रु'वाळी कांपी,

वो ! गाजर यूं बोले-
"है कोई जोधा ?
मो साम्हीं आवै
करतब दिखावै
वीः जुद्ध - कळा रा
भळे/म्हारे जेड़ा ।
वपु/फूड़ो पांमीजे
प्रिथा-पूत-पारथ,
म्हैं ऊभो/अड़ीकूं
अक्खाड़-मज्झी
मल्ल-जुद्ध सारू ।
हूं ! भीवं नै मसळूं
का अरजण नै झालूं,
सभा बीच उण नै
हूं/भर-भर पिछाड़ूं
आओ जोध कोई
मो-साम्ही आओ
दुरजोजण पैलाँ तो
हाजर म्हैं ऊभो,
नैड़ा तो आओ,
ओसाण आया
भळे/सांची वताऊं,

सुण/कोप्यो घण भारी
वो/जोधो दुरजोजण,
रातो कर आंख्यां
त्यौरिया चढ़ाई
धकै[1]/बोलण की चायो
पण/धाकड़ दड़ूक्यो
इक/नाहर विचाळै,
सभा मज्झ छिण में
वो/केहरी ज्यूं कूदयो,
त्यौरियां उणु बदळी
अर/बादळ ज्यूं गाज्यो
गहरो रै गहरो
बोल्यो–
"जात म्हारी !
अै. दोऊं भुजा है
हूं/मिनखा-देह पाई
है/मिनख जात म्हारी,
लज्जा नी आवै
ऋषिवर/पवख-पाती
जटा-जूट गूथ्या

हुया, आकळ-वाकळ
पाण्डु नैं कैरू
तावड तोड़ न्हाठा
कोई/औखद सारू,
कोई पंखो
झळै छिण,
जळ रा दै छांटा
कोई/लायो विदुर नै
करै दवा- दारू
"उठो मात जागो !
कैय/रोवै सहदेवो,
पण, मायड अचैतै
पड़ी मज्झ-मण्डप
हुई जड़ काया,
रोवै दास-दासी
ज्यू/सरगा सिधाया
पाण्डु-पाट राणी ।
पैरो दे ऊभी
नारया/कुरू-कुळ री
उडया होंस भारी
कोई/नाड़ी नै पकड़ै,
कोई/मुरछा उडावै
दे/थाळी रा लाटा,
दिल/धार्लरदो धानै

[illegible]

रह्यो तेज म्हारो,

[illegible]

निज इतिहास सारो,

म्हारो, [illegible]

उपजो. धर्म म्हारो,

पण/पे विप्र जाया

पा नैं/के कंयू,

बूझा भळै न्यारा,

धर्म-जोध आओ

पूछो-जात म्हारो,

म्है छू

सूत-पुत्तर,

पण/पारथ्य/किण रो जायो ?

भींवों कठै सू आयो ?

जुधिठर धर्म-धारी

जलम्यों जग कीकर ?

ह्वै हिव्वत/तो बोलो

पूछो भळै कांई ?"

. रह्यो बात आधी .

हा-हा कार मचग्यो.

सभा बीच छिण में

पांचवों पर्व

महा समर री पूरब-सिञ्झ्यां

महाकाळ रा
धूंसा[1] वाजै
कुरुखेत विच
झगळ[2] कसै भड़
खड़-खड़, खड़-खड़
खेड़ै रथ नै[3],

धम्म-धम्म
धूजै पग धरणी
जत्थ-जत्थ
मैंगला[4] गुड़न्ता[4]
सुण्ड हिलावै

---

१. धूंसा—नगारे की शकल का बहुत बड़ा वाद्य-यन्त्र जो भैंसे के चमड़े से मढ़ा जाता है।
२. झगल—कवच
३. खेड़ै रथ नै – रथों को दौड़ा रहे हैं। (पृथ्वीराज कृत बेलि में भी यह शब्द इसी अर्थ में प्रयुक्त हुआ है)
४. मैंगळा—मद गळते हुए—मद मस्त हाथी

कुन्ती री काया
हुयां अंड़ो कांई ?

भळै/छिण भर रै मांई
गयू/वेहोसी छाई ?
हुयो/हत-प्रभ सो
फळपै/मन्न मांही
डूब्यो/सोच समंदां

तपसी मुत स्याणों
विदुर-सो ज्ञानी
करै उपचारा।

★ ★ ★

वागां[1] खींचें
वाजें नाम्या केवाणां नी
हींस गुर्मीजें[2] केवाणां नी

रथ-दळ/गजदळ
वाजि नें पैदळ
चतरंगणी-चमू
महा जुद्ध/रणहाणा मांण्डै,
व्यूह रचें नें
धर्में भुजाळा[3],
सिरस्त्राण[4]/बगतरा[5], जमदढ[6]
पांति-पांति[7]/पळकै
धारूजळ[8]/हाथ-हाथ में-
गुरज्ज, गदा/गुप्ती-कत्ती[9]

ा– वल्गा,(घोड़े के जबड़े में फसाकर सवार द्वारा पकड़ी गई रस्सी)
। गुर्मीजें– तेज दौड़ती हुई अश्व सेना में घोड़ों के नथुनों की आवाज
जाळा– विशाल भुजाओं वाले योद्धा
स्त्राण– सिर रक्षक कवच
ल्ला–देह रक्षक कवच
दढ़– कटार (यम दंष्ट्रा) यम की डाढ
ने-पाति– प्रत्येक पंक्ति में
ळकै धारूजळ हाथ-हाथ में– प्रत्येक हाथ में तेज धार वाले दुधारे
ण्डे चमक रहे है।
ी– कर्तरी (कैंचीनुमा शस्त्र) जो अत्यन्त प्रचीन काल में युद्धों में काम
ा था (दुर्गा सप्त सती तक में इस शस्त्र का उल्लेख मिलता है।)

वागां[1] खींचै
दाबै नास्का केवाणां री
हींस सुणीजै[2] केवाणां री
रथ-दळ/गजदळ
वाजि नै पैदळ
चतरंगणी-चमू
महा जुद्ध/मण्डाणा माण्डै,
व्यूह रचै नै
बगै भुजाळा[3],
सिरस्त्राण[4]/बगल्लां[5] जमदढ[6]
पाति-पाति[7]/पळकै
धारूजळ[8]/हाथ-हाथ मे
गुरज्ज, गदा/गुपती-कत्ती[9]

ा– बग्गा (घोड़े के जबड़े में फंसाकर सवार द्वारा पकड़ी गई रस्सी)
मुणीजे– तेज दौड़ती हुई अश्व सेना में घोड़ों के नथुनों की आवाज
जाळा– विशाल भुजाओं वाले योद्धा
स्त्राण– सिर रक्षक कवच
ल्लां–देह रक्षक कवच
दढ़– कटार (यम दंष्ट्रा) यम की दाढ
ते-पाति– प्रत्येक पंक्ति में
कें धारूजळ हाथ-हाथ में– प्रत्येक हाथ में तेज धार वाले दुधारे
ण्डे चमक रहे हैं।
ी– कर्तरी (कैंचीनुमा शस्त्र) जो अत्यन्त प्राचीन काल में युद्धों में काम
ा था (दुर्गा सप्त सती तक में इस शस्त्र का उल्लेख मिलता है।)

वागां[1] खींचे
वाजे नाग्या केकाणां री
हीस मुणीजे[2] केकाणां री

रथ-दळ/गजदळ
वाजि नै पैदळ
चतरंगणी-चमू
महा जुद्ध/मण्डाणा माण्डै,
व्यूह रचै नै
बसै भुरजाळा[3],
सिरस्त्राण[4]/अगल्ला[5], जमदड[6]
पाति-पाति[7]/पळकै
धारूजळ[8]/हाथ-हाथ में-
गुरज्ज, गदा/गुप्ती-कत्ती[9]

---

१. वागा– वल्गा (घोड़े के जबड़े में लगाकर सवार द्वारा पकड़ी गई रस्सी)
२. हीस मुणीजे– तेज दौड़ती हुई अश्व सेना में घोड़ों के नथुनों की आवाज
३. भुरजाळा– विशाल भुजाओं वाले योद्धा
४. सिरस्त्राण– सिर रक्षक कवच
५. अगल्लां–देह रक्षक कवज
६. जमदड– कटार (यम दंष्ट्रा) यम की डाढ़
७. पाति-पाति– प्रत्येक पंक्ति में
८. पळकै धारूजळ हाथ-हाथ में– प्रत्येक हाथ में तेज धार वाले दुधारे खाण्डे चमक रहे हैं।
[illegible] ी (कैंचीनुमा शस्त्र) जो अत्यन्त प्राचीन काल में युद्धों में काम [illegible] र्गा सप्त सती तक में इस शस्त्र का उल्लेख मिलता है।)

संगी,खग[1]/त्रिमूळ सम्हाळै
ढल्ल, भल्ल[2]/तीखा त्रिबंका
अग्नि-बाण सज
वण्यां भयाणक,
महाकाळ-सा
अड़घा हरोळां[3]
सिलहां सूं/गरकाव हुयोड़ा[4]
आवध कसता/मद-छकिया अै
महाजुद्ध नै
खड़्या अडीकै ।

★ ☆ ★ ★

बीजै पाखै[5]/नदी तीर पै
अन्तस-तळ नै
भेदण आळी
बातां चालै/मां-बेटै विच,
आज मिळ्यो

---

१. संगी, खग– सांग व खड्ग नामक शस्त्र
२. ढल्ल, भल्ल– ढाल व भाले
३. अड़घा हरोळां–अड़कर सेना की प्रथम पंक्ति में खड़े होने वाले वि योद्धा
४. सिलहां सूं गरकाव हुयोड़ा–ऐड़ी से चोटी तक कवचों से आवृत्त(
५. बीजै पाखै–दूसरी तरफ

कुन्ती/

भींवों, अरजण, थूं
जुधिठर सूं भी
जेठो-बेटो
थूं है म्हारो ।
इण समाज रा
मोटा-माणस
मोटी/मरजादा रा वेली
केई अमोलख
रतन रुळावै है/माटी में
थारै जैड़ा ।
आ बेटा !
बिलखै थारी जामण
उण दिन सूं/जद
चीर बादळां नै प्रगट्यो थू'[1]
भाण-देव-सो
सभा-मज्झ
दम्भोळी-नाद कर
मल्ल-जुद्ध

१. चीर बादळां नै प्रगट्यो थू-तू भोड़ हणी बादलों को चीर कर प्रा हुआ था ।

महानगर [illegible]

उण पाचां नं/थूं त्रिकम ज्यूं

* * * *

वरसां/गूं ज्यं

घुटयो रयण-दिन

ज्वालामुखि-सा

फूटपड्या हा,

कुण पाळ्यो
कुण दियो मान
कुण है ठुकरायो,
वस विहूणों / भटक्यो जग
केई भाठा भांग्या,
सूत-पूत/सुणतां-सुणतां
सै/जलम गमायो,
दोय घड़ी अब सेस;
बीतग्यो बेळा सारी
कुरू राज रै कारण।
अरपित काया म्हारी
भल जाणी म्है रीत
नींवत कांई
रिपु-दळ री,
दुरजोजण रो पक्ख
निवळ करणै री/छळरी
विष्णु/बण्यो भिखारी
बळी-भूप
वारणै ज्यूं,
त्यूं/जिष्णु मांग लेग्यो,
छळ-छन्द/कोच-कुण्डल

मायड़ अम्हे पधारचा,
नेह रा वेवाती वाळा,
अव/हेज कैड़ो उमड़चो
परिणाम सोच्या रण रं
पण/करण जीवता तो
मिच्छ्या न पूरी व्हैला
जदुवेन्द्र/चाये त्यागो
भल नेह/मरकटधज रो
अधिरत्थ-सुत नी त्यागे
पण साथ/दुरजोजण रो।"
पडदा/हिये रा खुलग्या
सुत रा सुणी/जद वाणी,
महाकाळ/कुल पं नाच्यो
मनड़ मे/अंडी जाणी।
रोवै/हियो घण रोवै
मुळगे हो/पीजर मारो,
देवळ पणी-सो ऊभो

अंध-कुवां, भळ',
अंध-कुवा बिच
लीली-लकड़ी,
धुकै रयण-दिन
हियै विचाळै
मांय धुधावै,
आसै–पासै
धुंवो नी दीसै
अध्ध वळी
भळै/अध्ध बूझी-सो,
सुळगै हियो
वस/वरसां सूं सुळगै
वळणों ई चावै
वळ नीं पावै,
अैड़ी ई गत की
कुन्तां रै चित्त री
कुन्तां रै तन अर
कुन्तां रै मन री
झांकै ही ऊंची
सुन्न/गिगन में
पल्लो पसार्‌यां

आगै वन में
लाग्यो दावानळ
धू-धूं करतो/लपटां काढ़ै
दसूं-दिसा सूं
वधतो ई आवै ।
कवळी-न्हानी/कूंपळ म्हारी
पान-फूल-पांखड़ल्यां लीली
डाढ़ा लोला/सघन कुञ्ज-सा
वण्यां सातरा/ऊभा हरखै
आखै वन विच / सबसूं सखरा
गाछ अजूवा/निज वाखळ रा ।
आंध्यां में ज्यां
अडिग/अड़ै नित
तूफाना विच
चुस्कै नी मुस्कै,
वज्जर ही चाये
माथै वरसो
सैंठा रै सैंठा/मोटा दरखत
दावानळ नै/क्यूं तेड़ै है
निज मिन्छ्या सूं ।
हे भगवत् !
क्यूं/मड़ियो ओ भ्रम

बाटॅम्मन रचवाणी चावै
माटाणी थू/इण धरती पर ।
माचाणी रे'वाईलो
मागी माया नै
म्हारी ई कूख रो
मोभी बेटो
काल दिनगै !!

*   *

काल दिनगै,
रण जद छिड़सी
तीखा-तीरा मू छेदैलो
माचाणी के/निज अनुजा नै !!

अणहोणी देखूली अैडी
हूं कीकर !!

हे धरती मा !
थूं/ठौड़ म्हनै दै,
वरुण-देव !
लै / म्हनैं लुकालै,
जलम दुख्यारी
इण दुखिया नै
लुक जावण दे—
—थारै घर में ।

मरक नैण
नाचै निरवाण,
डग-मग करतां
पग दाऊ भैन्या
प्रिया/विया रै
भार दब्योड़ी
मरकी आगै ।
पड़्यो चरण पर
दौड़ करण नद
उठा पूत नै
गळै लगाया,
हरख्या रूं-रूं
घणं गळगळै/हिवड़ो उमग्यां,
नैणां रै मारग
बह निसर्यो/अणथाग
वाछळ-नीर हियै रो,
हिचक्या वधग्यी
दोऊ ई पासै ।

* * *

सेवट धीजो
धार हियै विच,
चरणा री रज
लगा भाल सूं

बोल्यो यूं ठीमर वाणी[1] में–
"जामण !
अटल प्रतिज्ञा आ है
'पारथ-करण काळ-सम लड़सी'
जग जाणै है/इण वातां नैं
वचन लोप नीं
करण हुवैला
चांद-सूरज चाये
मारग बदलो
करण वचन नीं
कदै फुरैला।
पण/पारथ नैं छोड़
लारलै/च्यारां माथै दया करूंला
महासमर में
पड़ै दाव विच–
आप डरूंला/उण च्यारां सूं,
गळी काढ़ नै/करूं किनारो
सत्त-वचन जामण सुण म्हारो।
गुपत भेद
गोपन ई राखै,

१. ठीमर वाणी–गम्भीर वाणी

मोड़ो हूयग्यो
गहन सिधावो।
गैग बाग
गावळ ई व्हैला
रण में/उण रो
मद /के विगड़ै,
द्वारिकेश री
मिळै देसना
धिन्न भाग उण
मरकट-धज रा
माधो जैड़ा
मिळ्या सारथी
कुण अकाज
कर सकै उणां रो।"
कैय/नीचो लुळ
चरण-चूम,
सटकै सूं/पूठो धिर्‌यो
मिहिर-सुत,
टग-टग करती
टुरी प्रथा पण
धण पछतावै
लै निस्कारा,
नैणां रै/मारग हिवड़ै रो
बाछळ-नीर
बहे इक धारा।

❀ ❀ ❀ ❀

अरि-दळ में
राळ-चळ मागीड़ी,
जीत सेवरो
पाण्डव लीधो,
जुद्ध सेस ! पण
मोटो दुष्मी
अजूं जींवतो

ज्यान बचा वो
न्हास्यो जावै
ओरण-जोहड़
ताळ-तळावां,
लुकतो न्हाठै
उज्जड़–बीहड़
केई ठौड़ पण
जोयो करड़ो
पाण्डव दल-रळ,

भीवसेण रो
आंख्यां सूं
चिणगार्‌यां छूटी

ऊभो दीस्यो

बीच खेत में ।

मार कड़कड़ी

भीवो दानों

केहरी ज्यूं

कुञ्जर पर झपटै

करड़्यो झपटयो,

अन्त समै/घुघ्घायो करड़ो,

आंख्यां, अंगारा ज्यूं राती

रगत रंग/लपटां सी काढै,

करड-करड़ भळै

दांत पीसतो/होंट काटतो

गहरो गूंज्यो

मार कड़ीकड़ी

ठोक गदा सूं

जंघा चीरी

दुरजोजण री ।

जिण जंघा पै

भरी सभा बिच

पांचाळी नै

बैठावण रो

गंगाड़ा भरनो
करया पाधरा
गैठा दरगत
जीव जन्त/आयो वन राई,
जगम-जग नै
जड़ु वणायो
छिण भर माही।

मुन्न वापरी
दसू-दिसा बिच,
हुयो अंधारो
आज धरण पर,
समरागण सू
कोस-कोस लग
रुळै भोडवया
रण-मल्ला री।
गोठ मनावै/कंक-कंकण्या
घूमर घालै,
पेड-पेड/गादड़िया हरखै
किरळ्यां करती

नाचै गावै ।

रुहिर-कीच में
रूण्ड सड़ रैया,
गिरज पड़ रैया
झपट-झपट
किरळाट्यां छोड़ै
काळा-काळा/दळ-बादळ ज्यूं
उमट्या आवै
आज कांवळा ।
ठौड़-ठौड़/कंकाण्यां चम्पै
चरण-भाल, चैरो
चोंचां सूं
नर वीरां रो ।
केई जोगण्यां
रगत चूंसती
चुगै भोडक्यां
हरख मनावै,
बम-बम करता/भैरू नाचै
वाजै डैरू/डम-डम डम-डम,
घणणं-घणणं
घूंघरिया वाजै
चढ़ असवार्यां

लंगता जावै
घणै ई हरख सूं
वळोवळी नैं ।
भाग फूटग्या
मिनख देह रा,
मौजां माणै/गीध गादड़ा
आज धरण पै ।
गज देहां सूं
ववै पनाळा,
लथ-पथ-रथ
घायल घिघयावै
हाथी–घोड़ा ।
करै सपाड़ा
गिड़क-गादड़ा
रुहिर-तळावा,
भट-बाका री
भीम-भुजा
लै, उडै गिरजड़ा,
थान-थान पै
आज निवाणा
छलिया दीसै
रगत-मुण्ड सा ।

महाकाल
गाजै किलकारी
जुद्ध निवड़्यां
कुरू-खेत रो ।

बीजै पाळै
मधुसूदण-पाण्डव
मजब रळ
जया-जोग
उणियारा सारू
चिता रचाई
समर-भोम विच,

सिरै-काठ
चन्दण-पीपळ री,
भळै रचाई
चुग सस्तर
भाला वरछी अर
तीर तूणीरां
रथ तूट्योड़ा

काठ-कवाड़ा/कर-कर भेळा
कैई ठौड़ पर
दाह करम-किरिय बीरां री
जोय-जोय/जेठै-नैनकड़ै

क्रम सूं कीधी ।
धीजो टूट्यो/धरमराज रो
याको छूट्यो,
कुररी ज्यूं
कुरळातो जावै
अनुजा समेत
कुन्द मना व्है
नीर वहावै ।
आख्या सूं
ववै चौधारा,
विहू-दळा री
वेवा नार्‌या
डाढ़ो रोवै,
ठांड़-ठोड़
ऊभी गरळावै
गिगन कंपावै ।
केई नवोढ़ा/कुन्द-कळी-सी
केस खिंडायाँ/खाय पछाड़ा
छिन्न लता ज्यूं
लटपटाय छिण
मुरछित व्है-व्है
चेतो पावै ।

घणी धुंधाळै

[illegible] [illegible] हिरदो

गाढ़ी भारै।

घड़ी-घड़ी

डोळा [illegible] डिगारै

घात किरै ज्यूं

घुमै घरणी

धिन-धिन

दाझी जीं गयरायै।

भेद धाम गुण

दे गळांगळी

गंग पखेरां रै साथै दै

गंगा-जळ री।

नानकड़े जोधां सूं पैलां

भर-भर धोवा

उण नै जळ दै,

जूथ-पत्यां रो जूथपति

जोधो भट नामी

महासमर रो महासूर

राधा-सुत प्यारो,

करण/धरण तोलणियो

वांको/अग्रज थारो,

गूग-पूत/वद करण ?
कुरा रो/ प्रथम रतन
हाय ! वाम विधाता
    त्रिया गमायो !!

गम्यो नही लै !
वो दीम्यो रै
धूट धोलगी
कठैई गम्यो नी.

    लै !
    वो आम्यो
    देख ! तीर पै
    ऊभो तैडे
    यन्नै, म्हनै
    इण सगळा नै
    घण हेताळू
    संग जणा नै
      वो बतळावै ।

काल रात सूं ई
हाथ उठा वो
आभै कानी,
हेलो मार-मार यूं कैवै ...

ल !
सुण लै !
वो कैतो जावै
भळै जतावै–
'जामण !
थांरां पूत सम्भाळ्या
पांचूं प्यारा
अब म्हैं चाल्यो,
लै !
लंगग्यो वोऽ "
हाय पूत !
हाऽ····करणऽ····
····करणऽऽ···!!,
कैय-मुरछां आई
पड़ी धरण अणचेत
पंच-पाण्डु री माई।
★ ★ ★ ★
"गजब-गजब"
कैय जळ बिच डाढयो
जेठो-पाण्डु
माथो कूटै
निज हाथां सूं

"हाय माधवी !
गजब हुयो
कीकर कर दीन्हे
इण जग मे हूं
महा पातकी, नीच घणो
बण्यो अपराधी
धिक्क जमारो/है सब म्हारो
धिक्क-धिक्क
इण जीवन-सार मैं
गाम घाट मैं
हाय माधवी:::
.. .."

"शान्त-शान्त
हे परम राज !"
सहसा प्रगट्या हाट
सतवन्ती-नन्दण/चन्दण सू
परचित देहि
महक्या करड़ा,
चौफेरी सीतळता छाई,
किसन-दैपायण
धीर गम्भीरां
इमरतसी वाणी बरसाई,

सातवों पर्व

पछतावै री पड़धुन

खारै समन्दर
महा गर्त बिच
छिटक पड़यो
हीरो लाखीणों
बात-बात में,
हाय विधाता !
जी'सोरो छिण
कर नी पाई,
राम धुहाई,
मौत बगस दे
आज इण घड़ी,
बे माता यू !
कुबेळां बिच
म्हनै क्यूं पड़ी ?
धूड़ रळ गयो
मिनख जमारो

हाय मावड़ी !
खेल शेष सब,
कांई बणै अब
किण भय सूं/म्हैं
भेद लुकायो/आखी ऊमर ।
आंखमीच(म्है)
छाती ऊपर
—भाठो मेल
टुरती रैयी
सुपनै दांई
ऊमर भर,
टग-पग / तेज रै
पुंज रो/तिरस्कार
पेड-पेड/टगर-मगर
झांकती/संपती रैयी
जाणै क्यूं ?
बैवतो ग्यो
वाछळ-नीर
अणथाग/अणमोल
बेळां-कुबेळां
टप्-टप् टपूकड़ा
मोती सा/ढळकै हा

जीवण मरूथल रा ·
तपियोड़ा धोरां बिच
बूंद/मटियामेट-सी
भतूळियां उठै
घड़ी-घड़ी / पळ-पळ
झींणां-सा/झांईं-मांईं
पड़बिम्ब नाचै,
पड़धुनां गूंजै,
ऊंडै/अंध-कुवै बिच
"ओ कैड़ो अंधारो ?
अेकै ई/रीत सूं
पायोड़ा पूत-फळ
अेक प्रिया-पूत नैं
बीजो /सूत-पूत क्यूं ??

म्हैं लाई
मन्तर साज
च्यारूं रतन अमोलख्या
पण पूछूं
किण नैं आज,

कुण लेग्यो
म्हारी दिव्य-मणि !

पंच-रतन सिरमौर
छटवों म्हारो
मिहिर-सुत,
कुण गजबी
लियो चोर
सबसूं सखरो
दिव्य-रतन ।

।। इति ।।